INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 3, March 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की लिंग-आधारित प्राथमिकताओं एवं रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन।

पुष्पेन्द्र कुमार
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, संस्कृति विश्वविद्यालय
मथुरा, उत्तर प्रदेश

डॉ रैनू गुप्ता
डीन, शिक्षा संकाय, संस्कृति विश्वविद्यालय
मथुरा, उत्तर प्रदेश

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण करना था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विद्यालयी शिक्षा को कौशलोन्मुख एवं रोजगारपरक बनाने की दिशा में व्यावसायिक शिक्षा के समावेशन को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। इस संदर्भ में यह आवश्यक था कि यह परीक्षण किया जाए कि विद्यार्थी इस एकीकृत शैक्षिक मॉडल को किस प्रकार ग्रहण कर रहे हैं तथा क्या उनकी अभिवृत्तियों में लिंग के आधार पर कोई सार्थक भिन्नता विद्यमान है।

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। कुल 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) को नमूने के रूप में चयनित किया गया। डेटा संकलन हेतु एक मानकीकृत मापक का प्रयोग किया गया, जो सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों को मापने के उद्देश्य से निर्मित था। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण हेतु औसत मान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) तथा क्रिटिकल रेशियो (CR) का उपयोग किया गया।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि छात्रों का औसत मान 35 (SD = 9.12) तथा छात्राओं का औसत मान 33 (SD = 8.13) प्राप्त हुआ, जबकि समग्र औसत 34 (SD = 8.94) रहा, जो औसत से उच्च श्रेणी का संकेतक है। क्रिटिकल रेशियो का मान 1.63 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को 95 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर स्वीकार किया गया।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सामान्य शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों में सकारात्मक एवं अनुकूल अभिवृत्ति विद्यमान है तथा यह अभिवृत्ति लिंग-निरपेक्ष है। यद्यपि छात्रों का औसत स्तर छात्राओं की तुलना में कुछ अधिक पाया गया, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। यह परिणाम संकेत करता है कि एकीकृत शिक्षा मॉडल विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं, कौशल विकास एवं भविष्य की आजीविका संबंधी आकांक्षाओं के अनुरूप है।

अतः अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि विद्यालयी स्तर पर सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण को समावेशी दृष्टिकोण के साथ लागू किया जाना चाहिए, जिससे दोनों लिंगों के विद्यार्थियों को समान अवसर उपलब्ध हो सकें।

मुख्य शब्द: सामान्य शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, एकीकरण, लिंग-अंतर, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी के ज्ञान-आधारित समाज में शिक्षा की भूमिका केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, अपितु यह विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी कौशलों, कार्य-दक्षता तथा व्यावसायिक दक्षताओं से सुसज्जित करने का माध्यम भी बन गई है। वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति एवं बदलते श्रम-बाजार की आवश्यकताओं ने शिक्षा प्रणाली के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में कौशल-आधारित अधिगम को विशेष महत्व प्रदान किया जा रहा है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी विद्यालयी शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, लचीला तथा रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण की अवधारणा को प्रोत्साहित किया गया है। यह एकीकरण विद्यार्थियों को पारंपरिक शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल, समस्या-समाधान क्षमता तथा कार्य-उन्मुख दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, बल्कि विद्यार्थियों को भविष्य की आजीविका के लिए भी तैयार करती है। माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह महत्वपूर्ण चरण है जहाँ विद्यार्थी अपने शैक्षिक अभिरुचियों, क्षमताओं एवं भावी व्यावसायिक विकल्पों के प्रति अधिक जागरूक होने लगते हैं। इसी स्तर पर विषय-चयन, करियर-आकांक्षा तथा आत्म-परिचय की प्रक्रिया सशक्त रूप से विकसित होती है। अतः यह आवश्यक है कि इस स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, प्राथमिकताओं एवं रुचियों का वैज्ञानिक परीक्षण किया जाए।

विशेष रूप से, लिंग के आधार पर संभावित भिन्नताओं का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं एवं रूढ़ धारणाओं के कारण शिक्षा एवं व्यवसाय संबंधी विकल्पों में लैंगिक अंतर देखने को मिलता रहा है। यदि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का एकीकृत मॉडल वास्तव में समावेशी एवं समान अवसर प्रदान करने वाला है, तो यह अपेक्षित है कि इसके प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति लिंग-निरपेक्ष हो। उपरोक्त संदर्भों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, ताकि इस शैक्षिक पहल की प्रभावशीलता एवं समावेशिता का वस्तुनिष्ठ आकलन किया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों का लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

विशेष रूप से, यह अध्ययन इस बात का परीक्षण करने हेतु अभिप्रेत है कि क्या छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्तियों, रुचियों तथा प्राथमिकताओं में इस एकीकृत शैक्षिक मॉडल के प्रति कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है अथवा नहीं। इसके माध्यम से यह भी स्पष्ट करना उद्देश्य है कि व्यावसायिक शिक्षा के समावेशन को दोनों लिंग किस स्तर तक स्वीकार करते हैं तथा यह पहल लिंग-निरपेक्ष दृष्टिकोण से कितनी प्रभावी है।

परिकल्पना

H_0: सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति छात्र एवं छात्राओं की प्राथमिकताओं एवं रुचियों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं होगा।

अनुसंधान विधि

1. अनुसंधान डिज़ाइन

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। यह पद्धति विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों, प्राथमिकताओं एवं रुचियों का यथार्थ एवं वस्तुनिष्ठ चित्र प्रस्तुत करने हेतु उपयुक्त मानी जाती है। चूँकि अध्ययन का उद्देश्य सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का लिंग-आधारित तुलनात्मक विश्लेषण करना था, अतः सर्वेक्षण पद्धति को उपयुक्त अनुसंधान ढाँचे के रूप में अपनाया गया।

2. नमूना

अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ सम्मिलित थीं। नमूना माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में से चयनित किया गया, ताकि दोनों लिंगों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। यह संतुलन लिंग-आधारित तुलनात्मक विश्लेषण की विश्वसनीयता को सुदृढ़ करता है।

3. सांख्यिकीय तकनीकें

संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया—

- **औसत मान:** विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों के केन्द्रीय प्रवृत्ति स्तर को ज्ञात करने हेतु।
- **मानक विचलन:** आंकड़ों के प्रसार एवं विविधता को मापने के लिए।
- **क्रिटिकल रेशियो:** छात्र एवं छात्राओं के औसत मानों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता निर्धारित करने के लिए।

इन सांख्यिकीय उपायों के माध्यम से लिंग के आधार पर संभावित अंतर का परीक्षण 0.05 के सार्थकता स्तर पर किया गया।

परिणाम

1. वर्णनात्मक आँकड़ों का विश्लेषण

माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों का लिंग-आधारित विश्लेषण करने हेतु औसत मान एवं मानक विचलन की गणना की गई। परिणाम निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत हैं—

समूह	N	औसत मान	मानक विचलन
छात्र	100	35	9.12
छात्राएँ	100	33	8.13
कुल	200	34	8.94

सारणी से स्पष्ट होता है कि छात्रों का औसत मान 35 तथा छात्राओं का 33 प्राप्त हुआ। समग्र औसत 34 रहा, जो औसत से उच्च स्तर का द्योतक है। इससे यह संकेत मिलता है कि दोनों ही समूहों में सामान्य शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकृत मॉडल के प्रति सकारात्मक एवं अनुकूल अभिवृत्ति विद्यमान है।

मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में प्रतिक्रियाओं का प्रसार मध्यम स्तर का है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थियों की अभिवृत्तियाँ एक समान दिशा में केंद्रित हैं।

2. तुलनात्मक विश्लेषण

चर	लिंग	संख्या	औसत मान	मानक विचलन	CR-मान	सार्थकता स्तर
प्राथमिकता और रूचियाँ	छात्र	100	35	9.12	1.63	0.05 स्तर
	छात्राएँ	100	33	8.13		
	Both	200	34	8.94		

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों का औसत मान 35 तथा मानक विचलन 9.12 प्राप्त हुआ, जबकि छात्राओं का औसत मान 33 एवं मानक विचलन 8.13 पाया गया। समग्र रूप में दोनों समूहों का संयुक्त औसत 34 तथा मानक विचलन 8.94 रहा, जो औसत से उच्च स्तर को सूचित करता है। CR मान 1.63 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः स्थापित शून्य परिकल्पना—कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति लड़के एवं लड़कियों की प्राथमिकताओं और रुचियों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा—95 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर स्वीकार की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि यद्यपि छात्रों में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रुचि छात्राओं की अपेक्षा कुछ अधिक देखी गई, तथापि दोनों ही लिंगों में इस एकीकरण के प्रति सकारात्मक एवं अनुकूल अभिवृत्ति विद्यमान है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण की पहल विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप है तथा इसका प्रभाव लिंग-निरपेक्ष है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम पूर्व में किए गए विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के निष्कर्षों से सामंजस्य रखते हैं। अनेक शोधों में यह प्रतिपादित किया गया है कि सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा का समावेशन विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ करता है तथा इसकी उपयोगिता किसी एक लिंग तक सीमित नहीं रहती।

National Education Policy 2020 के परिप्रेक्ष्य में मिश्रा और सिंह (2021) के अध्ययन में यह स्थापित किया गया कि विद्यालयी स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण से विद्यार्थियों की अभिरुचि, आत्मनिर्भरता एवं कौशल विकास में वृद्धि होती है। उनके निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि यह प्रक्रिया लिंग-निरपेक्ष है और दोनों ही लिंगों के विद्यार्थी इसे सकारात्मक रूप से ग्रहण करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर UNESCO (2020) ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के समन्वय से विद्यार्थियों की व्यावहारिक दक्षताओं का विकास होता है तथा लैंगिक समानता को भी प्रोत्साहन मिलता है। रिपोर्ट के अनुसार, जब पाठ्यक्रम में कौशल-आधारित अधिगम को सम्मिलित किया जाता है, तो छात्र और छात्राएँ समान रूप से लाभान्वित होते हैं।

इसी क्रम में कुमार (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में लिंग के आधार पर उल्लेखनीय अंतर परिलक्षित नहीं होता। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सामान्य पाठ्यक्रम के साथ व्यावसायिक शिक्षा को समेकित करने पर दोनों ही वर्ग के विद्यार्थी इसे रोजगारोन्मुखी और उपयोगी मानते हैं। शर्मा और वर्मा (2018) द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि व्यावसायिक विषयों के समावेशन से छात्रों और छात्राओं दोनों की अधिगम में रुचि तथा भविष्य के प्रति आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यद्यपि छात्रों का औसत स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, फिर भी छात्राओं की अभिवृत्ति भी समान रूप से सकारात्मक रही।

अतः उपर्युक्त अध्ययनों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान शोध के निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोध परिणामों के अनुरूप हैं। यह अध्ययन पुनः पुष्टि करता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण विद्यार्थियों की रुचियों एवं प्राथमिकताओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है तथा यह प्रभाव लिंग-आधारित भेदभाव से परे है।

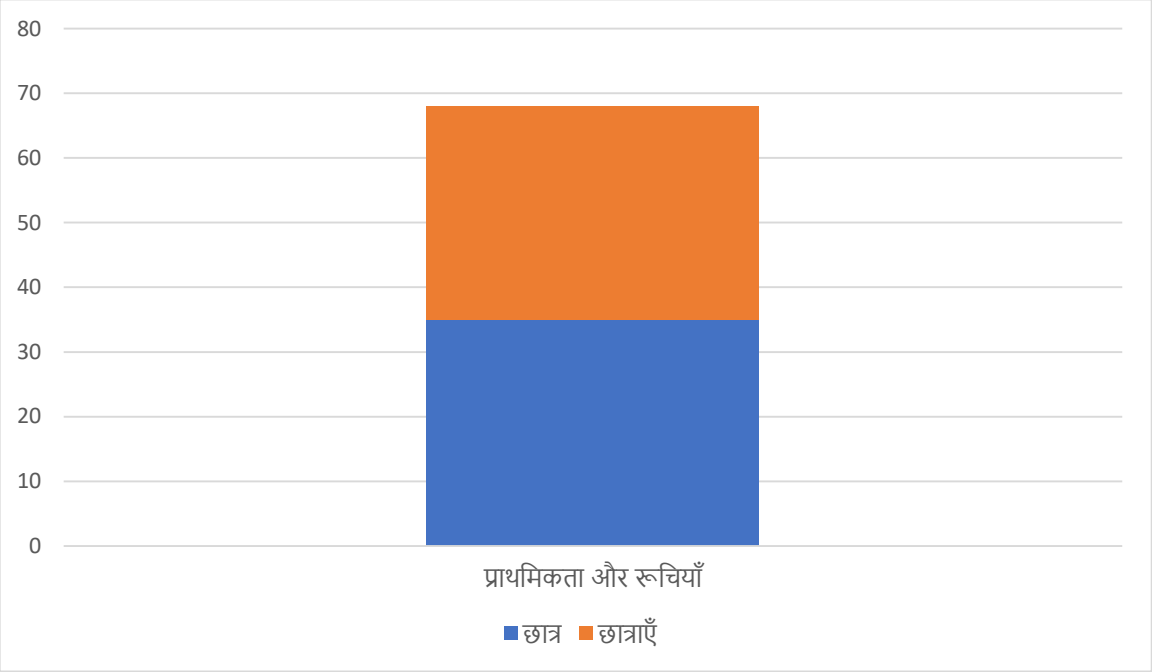

आरेख : माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं और रुचियाँ

उपरोक्त बार-आरेख यह संकेत करता है कि यद्यपि छात्रों और छात्राओं की रुचियों में अल्प अंतर विद्यमान है, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति लिंग-निरपेक्ष है तथा सामान्य शिक्षा के साथ इसके एकीकरण को दोनों लिंगों द्वारा सकारात्मक रूप से स्वीकार किया गया है।

छात्र एवं छात्राओं के औसत मानों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच हेतु क्रिटिकल रेशियो (CR) का प्रयोग किया गया। CR का मान 1.63 प्राप्त हुआ।

0.05 के सार्थकता स्तर पर यह मान सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना को 95% विश्वसनीयता स्तर पर स्वीकार किया गया।

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के प्रति विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है। यद्यपि छात्रों का औसत स्तर छात्राओं की तुलना में थोड़ा अधिक है, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है।

अतः यह कहा जा सकता है कि एकीकृत शिक्षा मॉडल को दोनों लिंगों द्वारा समान रूप से सकारात्मक रूप में स्वीकार किया गया है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण विद्यार्थियों के लिए न केवल स्वीकार्य है, बल्कि उनके दृष्टिकोण से उपयोगी एवं प्रासंगिक भी है। वर्णनात्मक आँकड़ों से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों ही लिंगों के विद्यार्थियों में इस एकीकृत मॉडल के प्रति औसत से उच्च स्तर की सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यमान है। यद्यपि छात्रों का औसत स्तर छात्राओं की अपेक्षा कुछ अधिक पाया गया, तथापि तुलनात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण किसी एक लिंग तक सीमित नहीं है।

यह परिणाम इस व्यापक धारणा का समर्थन करता है कि विद्यालयी स्तर पर कौशल-आधारित शिक्षा का समावेशन विद्यार्थियों की शैक्षिक संलग्नता, आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक जागरूकता को सुदृढ़ करता है। जब सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक तत्वों को समाहित किया जाता है, तो विद्यार्थियों को ज्ञान एवं कौशल का संतुलित विकास प्राप्त होता है, जिससे वे भविष्य की शैक्षिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों के प्रति अधिक तैयार होते हैं। लिंग-आधारित तुलना के संदर्भ में प्राप्त निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि समकालीन शिक्षा व्यवस्था में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रूढ़िगत लैंगिक धारणाएँ क्रमशः कमजोर हो रही हैं। छात्र एवं छात्राएँ दोनों ही इसे अपने करियर निर्माण, आत्मनिर्भरता तथा जीवन-कौशल विकास के लिए समान रूप से उपयोगी मानते हैं। यह प्रवृत्ति शिक्षा में लैंगिक समानता एवं समावेशन की दिशा में सकारात्मक संकेत प्रदान करती है।

अतः चर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण विद्यालयी स्तर पर एक प्रभावी शैक्षिक रणनीति के रूप में उभर रहा है, जो विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संतुलित रूप से संबोधित करता है तथा लिंग-निरपेक्ष शैक्षिक अवसरों को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं एवं रुचियों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। दोनों ही लिंगों के विद्यार्थियों में इस एकीकृत शैक्षिक मॉडल के प्रति औसत से उच्च स्तर की अनुकूल अभिवृत्ति पाई गई, जो इसकी प्रासंगिकता एवं स्वीकार्यता को दर्शाती है।

तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों एवं छात्राओं के औसत मानों में यद्यपि अल्प अंतर विद्यमान है, तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रुचि एवं सकारात्मक दृष्टिकोण लिंग-विशेष तक सीमित नहीं है, बल्कि दोनों लिंगों द्वारा समान रूप से स्वीकार किया जा रहा है।

अतः नीति-निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं विद्यालयी योजनाकारों के लिए यह आवश्यक है कि सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा के एकीकृत मॉडल को लागू करते समय लिंग-आधारित पृथक्करण के स्थान पर समान अवसर, समावेशिता एवं लैंगिक संवेदनशीलता को प्राथमिकता प्रदान करें। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा में समानता को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं आत्मनिर्भरता को भी सुदृढ़ करेगा।

संदर्भ सूची

Mishra, A., & Singh, V. (2021). Vocational education integration under National Education Policy 2020. *Journal of Educational Policy and Practice*, 12(2), 45–58.

National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2021). *Report on vocational education integration at secondary level*. New Delhi, India: Author.

UNESCO. (2020). *Global report on vocational education and gender equality*. Paris, France: UNESCO Publishing.

Sharma, R. (2020). Vocational education and self-reliance in the context of NEP 2020. *Indian Journal of Educational Studies*, 15(1), 78–92.

Kumar, R. (2019). Students' attitude towards vocational education at secondary stage. *International Journal of Research in Education*, 9(3), 112–120.

Kumar, R., & Singh, P. (2019). Gender perspectives in vocational education at school level. *Journal of Social Sciences and Education*, 7(2), 64–72.

World Bank. (2019). *World development report 2019: The changing nature of work*. Washington, DC: World Bank.

Agarwal, S. (2018). Integration of vocational education at secondary level and its impact on students' academic interest. *Educational Research Review*, 10(4), 55–67.

Sharma, R., & Verma, S. (2018). Inclusion of vocational subjects at secondary level and students' interest. *Journal of Contemporary Education Research*, 6(1), 23–31.

Ministry of Human Resource Development (MHRD). (2017). *National skill development initiatives in school education*. New Delhi, India: Government of India.

Tilak, J. B. G. (2016). Skill development and vocational education in India: Policy and practice. *Economic and Political Weekly*, 51(16), 38–45.

UNESCO. (2016). *Strategy for technical and vocational education and training (TVET) 2016–2021*. Paris, France: UNESCO.

King, K., & Palmer, R. (2015). Planning for technical and vocational skills development. *International Journal of Educational Development*, 45, 52–61.

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.